



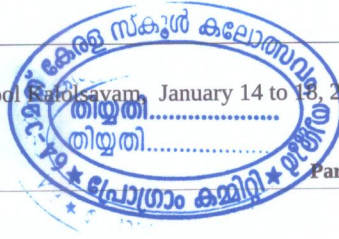
## जमीन की रोदन

हमारा प्रकृति को कितना सौन्दर्य है  
हमारा मिट्टी कितना आह्लादकारी है।  
नन् रािश बरसते समय  
मिट्टी को खूबसूरत कितना अच्छी है।

लेकिन इस आधुनिक युग में  
मिट्टी को दिल से, मानव लोग  
चोट पहुँचाता हुआ,  
हम ध्यान देती मिट्टी हमारा माँ जैसी हैं।

माँ हमको कई तकलीफ सहते से  
आमोश से पीडाओं में जीता है  
लेकिन माँ को सहारा के लिए  
हमको प्रसवुपकार नहीं करना चाहिए।

इस नन् मानव लोगों को  
मिट्टी जैसी माँ को ध्यान नहीं चाहते  
रक पल की सुकून को  
सारे जिंदगी नष्ट हो जाते हैं।



माँ जैसे मिट्टी सदा पुकार की

इस प्रकृति हमारे लिए

इस मिट्टी हमारे लिए

फिर हम क्यों उसको मन से चोट दिया ?

इस दुनिया में हम बीता है

इस मिट्टी में हम खेलते हैं

फिर क्यों वहाँ उसको नहीं ध्यान देता ?

क्यों वहाँ उसको नष्ट कराना तैयार करना ?

कुछ बरस को सुकून के लिए

मानव लोग पेड़ काटते हैं ।

जड़ियाँ बुरा जल लाती हैं

और हमारे जीवन में विनाश होगा है ।

प्रकृति का खुश हमारा खुश है

उसको हार हमारा हार है

नरक लोग की हालत देखकर

प्रकृति दुःख हो जा रही ।



अब धुन में धुलते अरमान  
वह छिने हर पहचान  
माँ को आँखों में आँसू भरत से  
और पिता का सपना बिखरते हुए।

मिट्टी को ढँकें हुए मानव  
कल तो उम्मीदों के सितारे  
आज भटकते हुए, युवा उठे  
हाथ बगलों, हम सब एक हैं।

कई साल पहले,  
प्रकृति हमको अपकार करती है  
लेकिन हमारा प्रवर्तन को दिखानेवाले  
मिट्टी हमारे लिए गुस्से होता है।

आजकल बारिश शक्त हो जाता  
प्रकृति प्रकोपों बढ़ जाता से है  
हमको वापस लौटाना तो  
हमारा बुरा प्रवर्तन का फल।





Item Code: 958

Participant Code: 043



मिट्टी की रोदन से पुकार  
मेरा कानों से आती है  
वे कहते से है हमारे लिए  
मैं उसका माँ जैसी हूँ।

प्रकृति का पुकार इससे लिए  
मेरा बचाऊँ, मेरा बचाऊँ  
मेरा पुराना खुशी वापस मिलाऊँ  
हम सहेली के साथ रहता हूँ।

बच्चों की हँसी गुंजे गगन से, मिट्टी में  
फूल खिले हर रंग चमक में,  
तितलियाँ नाचे हैं, और पवन गुनगुनाता  
प्रकृति रंग उत्सव का प्रतीक हो जायगा।

है ईश्वर, मेरी माँ जैसे मिट्टी को  
कई साल जीते को मेरा प्रार्थना करे  
मुझे कृपा कीजिए, मुझे खुश कीजिए  
जमीन को प्यार करना का अवसर दीजिए।



इस सुन्दर मिट्टी में  
कई किसानों सोना उपाना  
मेहनत के साथ जीवन बढाओ  
मिट्टी, हमारी प्रकृति सदा उपकार करती है।

मेरी चाहते हैं ; चाहते किया तो  
उसके गोद में सो जाने को  
कदम -कदम को बढ जाने को  
मेरी मिट्टी माँ को प्यार करता है।

